राग - बिहाग

~~आरोह~~

थाट - बिलावल

जाति - औडव सम्पूर्ण

वादी - ग

संवादी - नि

गायन समय - रात्रि का द्वितीय प्रहर

आरोह - ऩि सा ग म प नि सां

अवरोह - सां नि ध प, मे प, ग म ग रे सा

पकड़ - ऩि सा ग म प, ग म ग रे सा,
सां नि ध प मे प ; ग म ग रे सा

स्थाई (9वीं मात्रा से प्रारंभ)

क्यूं तुम रूठ गये मनमोहन,
कौन सी भूल भई है मोसे ।

अंतरा

तुम्हरे मिलन की प्यासी अंखियाँ,
आई के दरश दिखाजा मोहन ।

Scanned with CamScanner

स्थाई

नि़ सा ग म	प प नि सां	नि नि प मे	ग म ग सा
क्यूं ऽ तु म	रू ऽ ठ ग	ये ऽ म न	मो ऽ ह ना
0	3	x	2
प मे ग म	ग ग सा सा	प मे ग म	ग ग सा सा
कुँ ऽ ना सी	भू ऽ ल म	ई ऽ है ऽ	मो ऽ से ऽ
0	3	x	2

अंतरा

ग म प नि	सां सां सां सां	नि नि सां सां	नि सां नि प
तु म्ह रे मि	ल ना की ऽ	आ ऽ सी ऽ	अं खि यों ऽ
0	3	x	2
सां सां नि ध	प मे ग म	प प ग ग	रे रे सा सा
आ ऽ ई के	द र श दि	खा ऽ जा ऽ	मो ऽ ह ना
0	3	x	2

Scanned with CamScanner